काकाजी एवं पप्पाजी

काकाजी एवं पप्पाजी एक दिव्य बंधु जोड़ी है, जिन्होंने अपने गुरू की सेवा में अपना जीवन समर्पित कर दिया और उन्हीं का अंश बनकर जिए। उन्होंने अनेक मुमुक्षुओं को दिव्य जीवन की ओर प्रेरित किया व उनके जीवन में परिवर्तन लाकर, मूल बंधनों से मुक्त होने के लिए उनका मार्गदर्शन किया। योगी जी महाराज को पूर्णतः समर्पित, ये दोनों शिष्य प्रबुद्ध आत्मा तथा मौलिक तत्वचिंतक थे, जिन्होंने अपना सर्वस्व और सम्पूर्ण जीवन अपने गुरू की सेवा में समर्पित कर दिया।

बंधु जोड़ी में ज्येष्ठ पप्पाजी का जन्म 1 सितम्बर, 1916 को बोरसद में हुआ और उनका नाम बाबूभाई रखा गया। काकाजी का जन्म 12 जून, 1918 को नाडियाड में हुआ और उनका नाम दादूभाई रखा गया। उनका परिवार गुजरात के छोटे से शहर करमसद से था जो कि सरदार पटेल का पैतृक स्थान भी है। दोनों बंधुओं ने नाडियाड में शिक्षा ग्रहण की। सात और नौ वर्ष की बाल्यावस्था में ही बंधुओं ने संकल्प लिया कि वे पृथ्वी पर स्वर्ग लाएंगे, जिसमें किसी प्रकार का राग–द्वेष और भेद–भाव न हो।

स्कूल अध्यापक की औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए ज्येष्ठ भाई मोम्बासा, केन्या में बस गए तथा अनुज दादूभाई ने नैरोबी तथा कोलम्बों में अध्ययन किया और लंदन स्कूल ऑफ ईकोनोमिक्स से स्नातक हुए। अल्पावधि के लिए सेवा करने के उपरांत, वे एक सफल उद्यमी के रूप में उभरे और सफलतापूर्वक विशाल व्यवसाय का संचालन करने लगे।

बचपन से ही स्वामीनारायण की सर्वोच्चता में उनका अटूट विश्वास था कि वे शास्त्रीजी महाराज तथा योगीजी महाराज के दिव्य आविर्भाव के रूप में प्रकट हुए हैं। उनके गुरू योगीजी महाराज ने आर्शीवाद देते हुए, उन्हें 3 फरवरी, 1952 को गुजरात के सौराष्ट्र के गोंडल मंदिर में 72 घंटे की समाधि कराई।

अप्रैल, 1952 में, ज्येष्ठ भ्राता बाबूभाई मोम्बासा से वापस लौटे और योगीजी महाराज से भेंट की, जिनके बारे में उनके अनुज ने बताया था कि वे भगवान स्वामीनारायण के जीवन्त अवतार के रूप में कार्य कर रहे हैं। शीघ्र ही बाबूभाई को भी उनमें प्रभु की प्रतीति हो गई और वे अपनी सभी प्रकार की इच्छाओं, भावनाओं, महात्वकांक्षाओं को त्याग कर उनके अनुयायी बन गए।

तत्पश्चात, दोनों बंधुओं ने अपना संपूर्ण जीवन ईश्वर के प्रति समर्पित कर दिया। वे योगीजी महाराज के आध्यात्मिक उत्तराधिकारियों में से एक थे और वे अक्षर पुरूषोत्तम तत्वज्ञान के अध्येता बने। पुरानी पद्धतियों और रूढ़िगत परम्पराओं पर अंधविश्वास न करके, उन्होंने सतत स्वामीनारायण मंत्र को धारण कर जीवन का आधार बनाया और स्वयं भगवान स्वामीनारायण एवं मंत्र के अखंड धारक बनकर सेवक के रूप में प्रभु का कार्य किया।

काकाजी और पप्पाजी ने स्वामीनारायण सम्प्रदाय में अध्यात्म मार्ग के लिए पहली बार महिला मुमुक्षुओं का प्रवेश करवाने की पहल की। काकाजी और पप्पाजी ने महिलाओं को स्वामीनारायण सम्प्रदाय की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए अथक प्रयास किए ताकि वे अन्तगोगत्वा मुक्ति प्राप्त कर सकें। महिलाओं की मुक्ति हेतु इस पुनीत कार्य के लिए दिव्य बंधुओं ने सामाजिक बहिष्कार का दृढ़तापूर्वक सामना किया, क्योंकि सत्य को बहुत लंबे समय तक छिपाया नहीं जा सकता, उसकी हमेशा विजय होती है और आज वचनामृत के अंतिम अध्याय के 26वीं पंक्ति के अनुसार 600 से अधिक बहनें भगवान स्वामीनारायण सम्प्रदाय के मार्ग पर एक साथ अग्रसर हैं।

काकाजी ने अपने अनुभवों के आधार पर अध्यात्म पर कई लेख एवं पुस्तकें लिखीं और उनमें यह स्पष्ट किया कि अध्यात्म का अलौकिक शक्तियों के साथ कोई संबंध नहीं है, जिसे सच्चे मुमुक्षुओं को इसे पूर्णतः छोड़ देना चाहिए। उनकी प्रकाशित पुस्तकों में 'लॉर्ड स्वामीनारायण एंड एप्लाईड ब्रहमज्ञान', 'दि डिवाइन ग्रेस', 'पंचयज्ञ', 'दी रियल इसेन्स ऑफ तंत्र' तथा स्वामीनारायण प्रकाश, अक्षरधाम, भगवत कृपा, श्री अक्षरपुरूषोत्तम सत्संग पत्रिका जैसी विभिन्न आध्यात्मिक पत्रिकाओं में अनेकों लेख शामिल हैं, जिससे इस क्रांतिकारी आध्यात्मिक मार्ग के प्रति समाज में जागृति आई। इसी प्रकार, पप्पाजी ने स्वयं अनुपम भाग 1 से 8 : पराभक्ति सौरभ, संजीवनी मंत्र– 10 कमांडमेंट, समाज के लिए आचारसंहिता इत्यादि जैसी आध्यात्मिक धर्मग्रन्थों की सौगात दी।

काकाजी ने योगी डिवाईन सोसायटी की स्थापना की, जिसका उद्देश्य डिवाईन चैतन्य के प्रति लोगों को जागृत करना तथा अष्टांग योग स्वरूप के माध्यम से दीक्षित करना, जोकि अक्षर–पुरूषोतम योग का संयोग है, जो यहां और अब सभी में सर्वोच्च समझ पैदा करने तथा इस जीवन में परिपूर्णता और आध्यात्मिक अनुभूति को ग्रहण करने में सक्षम बना सके। उन्होंने, दृढ़तापूर्वक बताया कि आध्यात्मिकता का आधार इसका अंधा अनुकरण नहीं है बल्कि यह विवेचन, विश्लेषण और संकलन पर आधारित है। उनका मूल सिद्धान्त 'सहृदयभाव'– आध्यात्मिक भातृभाव एवं मित्रभाव है। उनके द्वारा स्थापित संस्थाएं भारत के सोखडा, संकरडा, मोगरी, मुम्बई, दिल्ली तथा यूएसए के शिकागो, फ्रांस के पेरिस शहर में स्थित हैं तथा ये संस्थाएं जाति, धर्म अथवा रंग भेद किए बगैर लोगों के हितार्थ अनुकरणीय कार्य कर रही हैं। पप्पाजी ने अहमदाबाद, मुम्बई, सूरत, नाडियाड, मानवादार, राजकोट, यूएसए एवं लंदन, इंग्लैंड में आध्यात्मिक केन्द्र भी स्थापित किए। दोनों ने संपूर्ण सत्संग को एक अलौकिक परिवार के रूप में माना, जैसाकि भगवान स्वामीनारायण ने अपने जीवनकाल के दौरान इस विचार का निरूपण किया था। संक्षेप में कहा जाए तो वे प्रेम, मैत्री तथा निस्वार्थ सेवा के मूर्त रूप हैं।

डाक विभाग काकाजी एवं पप्पाजी की जन्म शताब्दी के अवसर पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः–

मूलपाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सूचना के आधार पर

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण मोहर : श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसा
Denomination	: 500p
मुद्रित डाक-टिकटें	: 610300
Stamps Printed	: 610300
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक
Printer	: India Security Press, Nashik

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्यः ₹ 5.00

KAKAJI & PAPPAJI

Kakaji and Pappaji are divine duo brothers, who dedicated their life to the service of their Master and existed merely as his instrument. They inspired innumerable aspirants, brought about transformation in their life and guided them to liberate themselves from the clutches of vices. Both were supremely realized souls, original thinkers and devout disciples of Yogiji Maharaj, who dedicated all their possessions and their entire life to fulfill their Master's will.

Pappaji, elder of the two brothers, was born on 1st September, 1916 at Borsad and named Babubhai. Kakaji Maharaj was born on 12th June, 1918 at Nadiad and was named Dadubhai. Their family roots were from Karamsad, a small town in Gujarat and native place of Sardar Patel. Both brothers studied at Nadiad. At a tender age of nine & seven, the brothers made a vow to bring heaven on this earth, devoid of any discrimination and conflict.

While the elder brother Babubhai migrated to Mombasa, Kenya to take on formal vocation of a school teacher, the younger Dadubhai studied in Nairobi and Colombo and completed his graduation from London School of Economics. After a brief stint of service, he emerged as a very successful entrepreneur, handling large businesses.

Right from the childhood, his core belief was in Supremacy of Lord Swaminarayan, as realized through the Divine manifestation of Shastriji Maharaj and Yogiji Maharaj. His master Yogiji Maharaj blessed him in the form of 72 hours of 'Samadhi'- Supreme Enlightenment on 3rd Feb, 1952 at Gondal Temple in Saurashtra, Gujarat.

In April 1952, elder brother Babubhai returned from Mombasa and met Yogiji Maharaj, whom the younger one had hailed as the living embodiment of Lord Swaminarayan. Soon, Babubhai also became the torch bearer in the form of this radiance with unconditional surrender to Yogiji Maharaj relinquishing personal, emotional and any human desires.

Thereafter, both of them spent their whole life devoted to God. One of the spiritual heirs of Yogiji Maharaj, they were masters of the Akshar Purushottam doctrine. Without blindly following outdated rituals and dogmatic traditions, they remained continuously absorbed with Swaminarayan Mantra and became a living embodiment of the Mantra and its deity – the Supreme Lord; existing merely as an instrument of the God.

Kakaji & Pappaji facilitated initiation of lady aspirants to sainthood for the first time in Swaminarayan faith. Duo-brothers worked very hard to let women also become part of mainstream Swaminarayan faith and get ultimate redemption. They valiantly faced ostracization from the fellowship for this worthy cause of women's emancipation and today there are more than 600 sisters working together following the path of Lord Swaminarayan as per Verse 26 of Last Chapter of Vachnamrit.

Kakaji wrote several articles and books on Spirituality based on his own experiences and explained that spirituality had nothing to do with metaphysical powers and that a true aspirant should disregard them completely. His published works include 'Lord Swaminarayan and Applied Brahm Gnan', 'The Divine Grace', 'Panch Yagna', 'The Real Essence of Tantra' and numerous articles in different spiritual magazines like Swaminarayan Prakash, Akshardham, Bhagwad Kripa, Shri Aksharpurushottam Satsang Patrika, which enlightened the society towards a revolutionary spiritual path. Likewise, Pappaji authored spiritual scriptures viz. Anoopam Part 1 to 8; Parabhakti Saurabh, Sanjivni Mantra – 10 commandments; Acharsamhita – Code of conduct in Society etc.

Kakaji founded Yogi Divine Society, with its mission to awaken divine consciousness by means of Swaroop Ashtanga Yoga which is the synthesis of Akshar Purushottam Yoga, enabling all to attain the supreme understanding, perfection and spiritual realization in this life, here and now. He advocated not blind faith but spirituality based on investigation, analysis and synthesis. His basic tenet was that of 'Suhradbhav' – Spiritual Brotherhood and Friendliness. The institutions founded by him are based at Sokhada, Sankarda, Mogri, Mumbai, Delhi in India, Chicago in USA and Paris in France and are doing exemplary work for benefit of the masses without any distinction of caste, creed or color. Pappaji also established spiritual centres at Ahmedabad, Mumbai, Surat, Nadiad, Manavadar, Rajkot, USA and London, England. Both of them considered the entire satsang as a divine family, a concept demonstrated by Lord Swaminarayan during his life. In short, they are the very embodiment of love, friendliness and selfless service.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Kakaji & Pappaji on their birth centenary.

Credits:

Text	: Based on information received from the proponent
Stamps/FDC/Brochure Cancellation Cachet	: Smt. Alka Sharma